Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

इक्कीसवीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियों में मूल्य बोध का आधुनिक स्वरूप

पूनम
शोधार्थी, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

Article Info
Volume 5, Issue 4
Page Number : 92-97

Publication Issue :
July-August 2022

Article History
Accepted : 01 July 2022
Published : 20 July 2022

शोधसारांश– साहित्य का संबंध समाज से और समाज का संबंध व्यक्ति से है। बिना व्यक्ति के समाज पूर्ण नहीं हो सकता अतः साहित्य और समाज के केंद्र में व्यक्ति ही होता है। साहित्य की तमाम विधाएं होती हैं जिसके केंद्र में व्यक्ति ही होता है और उसी के जीवन के बहुआयामी पक्षों को चित्रित किया जाता है। व्यक्ति के सभी पक्ष किसी न किसी तरह के मूल्यों द्वारा ही निर्देशित होते हैं। राधाकृष्ण ने कहा है मनुष्य को केवल भौतिक साधनों द्वारा संतुष्ट नहीं किया जा सकता, आत्मा की संतुष्टि की किसी मनुष्य का प्रथम उद्देश्य होता है।

मुख्य शब्दः मूल्य, मूल्य बोध, नैतिक मूल्य, मानवीय मूल्य, पतन, सवर्ण, दलित आदि।

परिचय– मानवीय कर्म एवं मूल्य आपस में अर्न्तनिहित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964–1965 में शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को बताया है। मूल्य का कोई निश्चित या सार्वभौमिक मानदंड नहीं है अतः मूल्यों को विज्ञान की संज्ञा नहीं दी जा सकती। इन्हें मूल्य बोध कहना अति युक्तिसंगत है। हैराल एच. टाइट्स. के अनुसार कला और मानवीय आचरण में मूल्यों का अध्ययन ही मूल्य बोध कहलाता है।

मूल्य शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है। मूल धातु में यत् जोड़कर मूल्य शब्द बनता है, जिसका शाब्दिक अर्थ किसी वस्तु की कीमत को आंकना है, मूल्य लगाना आदि।

समाज में मानवीय क्रियाओं का अध्ययन मूल्य बोध के अंतर्गत किया जाता है। इसमें मूल्य के आधार पर किसी रचनाकार की रचनाओं का विश्लेषण किया जा सकता है। नीति शास्त्रा में लोगों के क्रियाकलापों को मूल्यों की कसौटी पर रखा जाता है। माना जाता है कि आदर्शवादी मूल्य मानव कल्याण के लिए होते हैं। इसी तरह समाजशास्त्राी मानवता एवं समाज कल्याण को मूल्यों की कसौटी पर रखते हैं। कई बार साहित्य में वर्णित आचरण और नीतियां सम्मत न होने पर भी उनका स्वयं का अपना एक मूल्य होता है।

इक्कीसवीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियों में मूल्य बोध के बदलते प्रतिमान साफ दिखाई देते हैं। हालांकि जैसे पहले था कि सवर्ण जाति के लोगों द्वारा दलितों पर अत्याचार किया जाता था, वह आज भी तमाम लेखिकाओं की कहानियों में चित्रित होता हे परन्तु फिर भी पहले से स्थिति काफी बदल गई है। समाज के मूल्यों में चाहें वह दलित हों, स्त्राी हों, उच्च वर्ग आदि में परिवर्तन लगातार देखने को मिलता है।

चन्द्रकान्ता लेखन को मात्रा भाषा विलास न मानकर इन्सानी जीवन की शर्त मानती हैं। स्त्राी लेखन की बनी बनाई रूढ़ियाँ ढोने के बजाय उन्होंने इस वैश्विक होते समय में, व्यवस्था के दुष्चक्र में फँसे मनुष्य की त्रासद स्थितियों से जुड़ने की कोशिश की है। अधिकांश कहानियाँ अमानवीयकरण, आतंक और मूल्यखिन्नता के उभार से जन्मी त्रासदियाँ हैं। उनकी

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

जन्मभूमि कश्मीर की रक्तरंजित पृष्ठभूमि पर लिखी कहानियों में आतंकवाद की परिणतियाँ, भय, अविश्वास और बेघर होने की पीड़ा का करुण राग ही नहीं, (एक ही झील) दुःख में हिस्सेदारी निभाती उदात्त मानवीयता भी है (रक्षक)। वहाँ विस्थापन की पीड़ा है, अपने ही देश में बाहरीजन होने का कलेजा जलाने वाला अहसास है, विगत के वैभव की धूमिल होती स्मृतियाँ हैं, तो ध्वस्त खंडहरों में भी जीवन की गूँज सुनने की कोशिश है। कोई भी विपत्ति जीवन से बढ़कर नहीं। आदिकाल से मनुष्य के भीतरी तहखानों में बजते जो जीवन के मद्धम सुर हैं वे निर्जन में भी उत्सव का राग रचते हैं, (निर्जन में उत्सव) लेखिका का नितान्त निजी सच, बाह्य जगत के, विशाल फलक के आनुभूतिक ज्ञान से जुड़कर जिस कथालोक की सर्जना करता है, वह उस वैयक्तिक को सार्वजनिक और सार्वभौमिक विस्तार देता है। तेजी से बदलते इस अर्थकेन्द्रित समय में तकनीकी– प्रोद्यौगिकी प्रगति ने भले बाहर की दूरियों कम कर दीं, पर मनों की दूरियाँ बढ़ा दी हैं। भौतिक संसाधनों को पाने की दौड़ में आत्मीय रिश्ते–नाते अपनी उष्णता खो कर कैसे एक निभाव मात्रा बन कर रह गये हैं इसे 'अनवांटेड विल...' कहानी में देखा जा सकता है। प्रेम जैसे अन्तरंग सम्बन्धों में जुड़ाव की जगह अब अपने–अपने अलग स्पेस ढूंढने की प्रयोगात्मक होड़ सी मची है। (थोड़ा सा स्पेस अपने लिए) इसका एक चित्राण है। स्त्राी विमर्श के झंडे उठाए बिना, लेखिका स्त्राी अस्मिता के प्रश्नों को, सामाजिक पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में शिद्दत से उठाती, स्वतन्त्रा चेता स्त्राी के पक्ष में खड़ी दिखाई देती हैं। आज की चेतना सम्पन्न स्त्राी, पुरुष वर्चस्व का दम्भ और रूद्र नैतिकता की कैद को अपनी नियति मानने से इनकार करती है। (अलकटराज देखा?) उम्रकैद की यातना से छुटकारा पाने के लिए वह न केवल आवाज उठाती है, बल्कि उससे मुक्त होने के लिए छोटे–बड़े संघर्षों के बीच गुजरती अपनी आकांक्षा और स्वप्नों को पूरा करने के लिए भी सन्नद्ध है। इसे 'अलकटराज देखा?', 'पिंजरे में 'हवा', 'पीर पर्वत', 'गुम चोट' और 'गुच्छा भर काले केश' कहानियों में महसूस किया जा सकता है। भ्रष्ट व्यवस्था के संजाल बीच, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति का मोहभंग, वृद्धावस्था में अकेले पड़ने की यातना, आदि, युगीन यथार्थ के विद्रूपों को कहानियों में इस प्रकार गूँथा गया है कि कहानियाँ प्रश्नाकुल भी करती हैं और संवेदना का उत्खनन भी।

''अल्कटराज़ देखा'' नामक कहानी में लेखिका ने छवि नामक स्त्राी की कहानी दिखाई है। इसमें लेखिका बताती हैं कि किसी समय कॉलेज के दिनों में छवि रघु नामक सहपाठी से प्रेम करने लगती है, परंतु अपने प्रेम का इजहार उस पर नहीं करती। छवि के मां–बाप को रघु से प्रेम करना पसंद नहीं था। कुछ समय बाद रघु पीएचडी करने दिल्ली चला जाता है, और छवि फिर अकेली हो जाती है। छवि के मां–बाप छवि के लिए रवि नामक एक एन.आर.आई. का रिश्ता लेकर आते हैं। रवि के पैसे और शान शौकत को देखकर वे फिदा है। मां–बाप की मर्जी के आगे छवि की नहीं चलती और वह भी इस रिश्ते को हां कर देती है। शीघ्र ही दोनों की शादी हो जाती है और रवि, छवि को अपने साथ अमेरिका ले आता है। अमेरिका के सैनफ्रांसिस्को शहर में वे लोग रहते हैं। शुरू में तो दोनों के बीच अच्छी तरह से तालमेल रहता है परंतु रवि का लगाव अपने बिजनेस पार्टनर कमल की तरफ बढ़ता जाता है। धीरे– धीरे छवि समझ जाती है, कि कमल और रवि के मध्य दोस्ती से बढ़कर भी संबंध हैं और वे संबन्ध अमेरिका जैसे शहर में मान्य हैं। रवि ने मात्रा एक कांट्रैक्ट बेस पर छवि से शादी की थी। छवि इन संबंधो को सह नहीं पाती और रवि के द्वारा उसको एक बच्ची पैदा होने के पश्चात, अंत में वह रवि से तलाक ले लेती है। परंतु उनके बीच अदालत के द्वारा कुछ नियम बना दिए गए थे कि रवि बच्ची को नियत दिनों में देख सकता है, और उसे उनके गुज़र–बसर हेतु मासिक धन और उनके रहने के लिए एक बंगला दे देता है। अब रवि ओर छवि का कांट्रेक्ट खत्म हो चुका था और दोनों अपनी–अपनी राहों पर चल पड़े थे। अब अलकटराज़ का द्वीप छवि को डराता नहीं था, क्योकी अब वहाँ कोई कैदी नहीं था। इस कहानी के माध्यम से लेखिका कहना चाहती है कि खाली रूपये–पैसे ही व्यक्ति को सच्चा सुख नहीं दे सकते हैं, उनके मध्य आपस में प्रेम होना और एकदूसरे के लिए सम्मान होना नितांत आवश्यक है। मां–बाप को बच्चों की खुशी के मूल्यों का भी ध्यान रखना चाहिए।

मैत्रायी पुष्पा द्वारा रचित ''पियरी का सपना'' नामक कहानी की नायिका रति तिवारी नामक एक औरत की कहानी है। इस कहानी में रति तिवारी कॉलेज के दिनों में मुकुंद माधव नामक एक लड़के से प्यार करती थी, जिसकी वजह से एक बार मुकुंद

माधव को और बाहरी लड़कों द्वारा बहुत मारा भी गया था। उसके पश्चात उसके मां बाप ने रति का बाहर निकलना बंद कर दिया और रति की शादी कर दी। रति को पता लगा की मुकुंद माधव की भी शादी हो गई और वह टीचर बन गया था। शादी के बाद मुकुंद माधव ने रति से मिलने की कई बार कोशिश की, परंतु रति, मुकुंद माधव से मिलने से डरती रही। रति लगभग 50 वर्ष की हो गई है और औरतों के कल्याण वाली संस्था चलाती थी। एक बार उसके छोटे भाई जयप्रकाश ने बताया की मुकुंद माधव मास्टर साहब आपसे मिलना चाहते हैं और फिर भाई रति को लेकर मुकुंद माधव से मिलाने चला गया। मुकुंद माधव रति को लेकर अपने घर गए, तो रति के मन में मुकुंद माधव की पत्नी के प्रति जो डर था वह खत्म हो गया, क्योंकि पत्नी ने रति को बहुत इज्जत दी और सम्मान से उनको भोजन आदि कराया और कहा कि उसके दो बच्चियों की शादी उनके नाम की खातिर हुई है अर्थात यह कहकर कि आपसे हमारा अच्छा परिचय है। रति के चलते समय मुकुंद माधव की पत्नी ने रति से कहा, यहां आते जाते रहना ताकि समाज में हमारी भी इज्जत बढ़ जाए। इस कहानी में इंसानियत के मूल्यों का बखूबी वर्णन किया गया है।

आधुनिक समय में बदलते मानवीय मूल्यों को रमणिका गुप्ता ने भी अपनी कहानियों में बड़े ही यथार्थवादी दृष्टिकोण से देखा और महसूस किया है। उनकी दो कहानियां ''चिड़िया'' और ''वह जाएगी अभी'' रिश्तो की भावनात्मक गहराइयों में ले जाती हैं। उनकी कहानी ''चिड़िया'' में वर्तमान युग की जटिलता में धाराशाही होते संबंध और भावनाविहीन रिश्ते और एकदम नितांत अकेले पड़े व्यक्ति की कहानी है। ''वह जिएगी अभी'' कहानी में एक प्रबुद्ध महिला की कहानी है जो स्वयं के अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। इनकी कहानी ''बहू झूठाई'' की नायिकाएं लेखिका के जीवन के खट्टे मीठे कड़वे अनुभवों के रंगों से रंगी जीवन्त व्यक्तित्व वाली महिलाएं हैं। उनका कहना है कि उन्होंने कभी भी स्वातः सुखाय नहीं लिखा, बल्कि उन्होंने जो भी धरती पर महसूस किया है उसी सच को लिखा है चाहे वह सच नग्न हो, विकृत हो, बुरा हो, हो पर यथार्थ का समावेश कभी कम नहीं होने दिया।

आजकल के समाज में नैतिकता का बुरी तरह से पतन हुआ है। उच्च पदों पर कार्यरत या अमीर लोगों के द्वारा सामाजिक कार्यों के नाम पर बुरी तरह भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जा रहा है। गरीबों के प्रति भी झूठी सहानुभूति दिखाई जा रही है। राजी सेठ द्वारा रचित 'घोड़ों से गधे' नामक कहानी में गरीबों के प्रति अमीरों की झूठी सहानुभूति का उदाहरण मिलता है। इस कहानी में उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों द्वारा गरीब बच्चों को उज्जवल भविष्य के सपने दिखाते हुए आश्रम एवं स्कूल खोले जा रहे हैं। इसी तरह के एक आश्रम की महिला मंडल की अध्यक्ष मिसेज सरिता सक्सेना अध्यक्ष हैं। दीनू नाम का एक लड़का गांव से शहर में, इस आश्रम में भाग कर पढ़ाई करने के लिए आता है, किंतु यहां आकर वह शोषण का शिकार हो जाता है। यहां पर सरिता सक्सेना अपने घर का कामकाज उससे करवाती हैं। बच्चों के प्रति उनके विचार इस प्रकार हैं–''असल में इन लोगों की रीड़ की हड्डी तो है ही नहीं, खड़े कैसे होंगे, इसीलिए आधा समाज रसातल में है....।'' उनके यहां काम कर–कर के दीनू की पढ़ाई की इच्छा भी अच्छी हो गई है। उसके मन का चित्राण करते हुए लेखिका कहती हैं–''किताब कापियों को लेकर उनके सामने पटकता बोला, रख लीजिए इन्हें, मैं नहीं पढ़ूंगा.. नहीं पढ़ूंगा...।'' लेखिका इस कहानी के माध्यम से दिखाना चाहती हैं की इस तरह के लोगों के द्वारा तमाम बच्चे शोषण का शिकार हो रहे हैं और उन्हें विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है।

मूल्यों को ताक पर रखती नासिरा शर्मा द्वारा रचित ''बुतखाना'' नामक कहानी रमेश नाम के एक लड़के की है, जो इलाहाबाद से पढ़ाई करके दिल्ली नौकरी की तलाश में अपने चाचा–चाची और मित्रा दीक्षित के घर दिल्ली आया है। दिल्ली आकर उसे 15 दिन में ही टीचिंग की नौकरी मिल जाती है और उसने अपने लिए एक घर भी किराए पर ले लिया है। दिल्ली की भागती–दौड़ती जिंदगी और रोज बस में धक्के खाते लोग उसे सोचने पर विवश कर देते हैं कि क्या उसने दिल्ली आकर सही किया? अंत में उसके होने वाले बहनोई का कोई मित्रा जो कानपुर में रहता था और दिल्ली में नौकरी कर रहा था उसको सिनेमा हॉल में मिलता है, सिनेमा देखने के बाद जब वे लोग घर जाने के लिए बस में चढ़ते हैं, तो किसी मिनी बस ने उसके होने वाली बहनोई के उस दोस्त को कुचल दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। सब लोग उस मौके से उससे भी भाग जाने को कहते हैं, और कहते हैं वरना पुलिस की पूछताछ का सामना करना पड़ेगा। इस डर से वह भी अपने घर जाने को बस में बैठ

जाता है, और सोचता है कि यहां पर इंसान एक बुत की तरह है और यह शहर एक बुतखाना है। इस कहानी में लेखिका ने दिखाया है कि कोई भी व्यक्ति किसी की परेशानी के लिए दिल्ली जैसे शहर में नहीं रुकता है, यहाँ मानवीय मूल्यों का कोई मोल नहीं है।

''गहरे कत्थई रंग का मखमली फिरन'' नामक कहानी में क्षमा कौल ने कश्मीरी पंडितों के विस्थापन व उनकी निर्मम हत्या का वर्णन किया है। कश्मीरी आतंकवाद पर लिखित यह कहानी कश्मीरियों के दुखों को बखूबी बयान करती है और कश्मीर में किस तरह मानवीय मूल्यों का हरण हुआ है, उसे बखूबी चित्रित करती है।

मधु कांकरिया के कहानी–संग्रह ''युद्ध और बुद्ध'' में मूल्य बोध का बखूबी वर्णन मिलता है और युद्ध की वजह से जो मूल्यों की धज्जियाँ उड़ायी जाती हैं, उसका बखूबी चित्राण इसमें किया गया है।

अलका सरावगी द्वारा रचित ''दूसरी कहानी'' अपर्णा और उसके पुत्रा सुदर्शन की है। अपर्णा का पुत्रा सुदर्शन 9 वर्ष का होने पर भी ठीक से चल–बोल नहीं पाता है। अपर्णा अपने पुत्रा से बहुत प्यार करती है और उसने अपने पुत्रा के ऊपर जब वह 9 वर्ष का था, एक कहानी लिखी जो उसे अधूरी लगी। इन 9 वर्षों में भी अपर्णा कभी निराश नहीं होती है और अपने पुत्रा की जीवन दशा सुधारने का भरसक प्रयत्न करती है। जब सुदर्शन 15 वर्ष का हो जाता है तब भी अपर्णा को अपनी कहानी अधूरी लगती है, परंतु सुदर्शन 15 वर्ष की आयु में सामान्य लोगों से ज्यादा समझदार और विवेकशील था। पहले वह अपनी मां के हाथों से खाना खाने में शर्म महसूस करता था कि कोई लड़का देख लेगा तो क्या कहेगा? परंतु अब वो समझदार हो गया है और किसी की परवाह नहीं करता। अपनी मां से कहता है कि अब उसका हकलाना भी काफी कम हो गया है। वह मां को समझाता है की उन्हें लोगों की परवाह करना छोड़ देना चाहिए। सुदर्शन में जीवन के प्रति नई ऊर्जा और आत्मविश्वास पैदा हो जाता है और जीवन के प्रति उसके नजरिए को जानकर अपर्णा की पुत्रा के प्रति जो फिक्र थी वह भी समाप्त हो जाती है। यह कहानी वर्तमान जीवन की विसंगतियों के मध्य जीवन के प्रति आत्मविश्वास को पैदा करते हुए मूल्य बोध की शिक्षा देती है कि जीवन का सौंदर्य जीवन की समस्याओं से घबराने से नहीं बल्कि समस्याओं का सामना करने से बनता है।

निष्कर्ष– मूल्य बोध किसी भी इंसान को जानवर से अलग करते हैं। इंसान के विकास के साथ–साथ इंसान के मूल्यों में भी परिवर्तन होता जाता है। मूल्य किसी भी समाज के लिए परम आवश्यक होते हैं। मूल्यों के अभाव में व्यक्ति के जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। इंसान की हर क्रिया में कोई न कोई मूल्य विद्यमान रहता है। हर समाज के कुछ निर्धारित मूल्य होते हैं। हम देखते हैं कि इक्कीसवीं सदी की महिला कथाकारों की कहानियों में मूल्य बोध का बखूबी वर्णन किया गया है।

संदर्भ

1. धीरेन्द्र वर्मा (संपा.) – 'हिन्दी साहित्य कोश' – पृ. 587
2. धीरेन्द्र वर्मा (संपा.) – 'हिन्दी साहित्य कोश' – पृ. 802
3. खेमराज श्री कृष्णदास – 'शुक्रनीति–2' – पृ. 35.
4. क्षमा कौल– गहरे कत्थई रंग का मखमली फिरन
5. क्षमा शर्मा–रास्ता छोड़ो डार्लिंग
6. क्षमा शर्मा–नेम प्लेट
7. क्षमा शर्मा–लड़की जो देखती पलटकर
8. A. H. Maslo (Ed.) - 'New Knowledge in Human Values - p. 178
9. इंदिरा दांगी– एक सौ पचास प्रेमिकाएं
10. इंदिरा दांगी– शुक्रिया इमरान साहब

11. Borgadas -'The Development of Social thought' - p. 63
12. प्रमिला वर्मा– अक्सों में तुम
13. कमल कुमार– अंर्तयात्राा
14. क्लाइडे कलसान –'अमेरिकन स्टाईल' – पृ. 205
15. मधु कांकरिया– बीतते हुए
16. मधु कांकरिया– चिड़िया ऐसे मरती है
17. मधु कांकरिया– युद्ध और बुद्ध
18. ममता कालिया– मुखौटा
19. ममता कालिया–थोड़ा सा प्रगतिशील
20. H. M. Johnson, 'Sociology - A systematic inforduction' - p. 49.
21. रमणिका गुप्ता–भारतीय दलित साहित्य कोश
22. रामगोपाल वर्मा 'दिनेश'– 'स्वाधीनता कालीन हिंदी साहित्य के जीवन मूल्य' – पृ. 16
23. राजी सेठ– दलदल
24. राजी सेठ–घोड़े से गधे
25. रत्ना लाहिड़ी – 'मूल्य, संस्कृति, साहित्य और समय' – पृ. 12
26. शशि सहगल – 'नयी कविता में मूल्य बोध' – पृ. 15
27. संतोष श्रीवास्तव– आसमानी आंखों का मौसम
28. सुधा अरोड़ा–काला शुक्रवार
29. उषा प्रियंवदा– बनवास
30. डॉ. हृदय नारायण मिश्र – 'विश्व कोश' – पृ. 365
31. डॉ. मोहिनी शर्मा – 'हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य' – पृ. 23
32. डॉ. प्रभाकर माचवे – 'हिन्दी साहित्य कोश' भाग : 1 – पृ. 604
33. डॉ. देवराज – 'संस्कृति का दार्शनिक विवेचन' – पृ. 168
34. डॉ. जगदीश गुप्त – 'नयी कविता : स्वरूप और समस्याएँ' – पृ. 12
35. डॉ. नारायण करण रेड्डी – 'मैन एडुकेशन एण्ड वेल्यूज' – पृ. 82
36. डॉ. गणपति चंद्रगुप्त–'हिन्दी भाषा एवं साहित्य विश्वकोश' – पृ. 528
37. डॉ. गंगाप्रसाद पाण्डेय – 'पहीयसी महादेवी' – पृ. 10
38. डॉ. गिरिराज शर्मा 'गुंजन'–हिंदी नाटकः मूल्य संक्रमंण
39. वंदना राग– यूटोपिया
40. च. व. शंकरराव–'समाजशास्त्राा'–पृ. 17
41. चन्द्रकांता– अलकटराज देखा
42. नासिरा शर्मा– बुतखाना
43. नासिरा शर्मा–दूसरा ताजमहल
44. अंजू दुआ जैमिनी– अति से इति

45. गीताश्री– प्रार्थना से बाहर
46. गीताश्री– डाउनलोड होते हैं सपने
47. मैत्रोयी पुषपा– पियरी का समना
48. अलका सरावगी– दूसरी कहानी
49. गीताश्री– डायरी, आकाश और चिड़िया